राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 93 15 जनवरी 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	37
3.	प्रेम (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	38
4.	आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम	39
5.	अनमोल वचन व ज्ञान-सार	40
6.	सत्संग सार	41
7.	सतगुरु कृपा	43

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 102

दिनांक : 3 मार्च, 1993

समय : दोपहर

चल सतगुरु की हाट, सौदा महंगा रे।
सतगुरु सांई पूरा तोलै, माशा ना देता घाट।
श्रद्धा करके कोए ले लो, बिन श्रद्धा नै गए नाट।।
ऊंच–नीच की गिनती नाहीं, प्रेमी के हों ठाठ।
कहैं कबीर, सुनो भाई साधो, लंघजा ओघट घाट।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियों, सत्संगियों, माताओ और बहनों! आप को तो इस बात का पता ही नहीं है। तुम सतगुरु की हाट पर नहीं गए हो। मैं सतगुरु की हाट पर गया था। मेरे जो पुराने सत्संगी हैं उन्हें पता है। मुझे पता है कि सतगुरु की हाट पर सौदा कैसे मिलता है। उस सौदे का मोल क्या है? और कौन उसका ग्राहक है? कबीर साहब ने वक्त के अनुसार शब्द बनाए। सुनने वालों ने उस वक्त में फायदा उठाया और वे तिर गए। आप लोग भी सुनते हो। हम हर वक्त कबीर जी की वाणी का व्याख्यान करते हैं।

कबीर साहब कोई मामूली संत नहीं थे। वे हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान और ईसाई सभी के थे। संत जो आते हैं वे सब के

सांझले होते हैं। वे जाति, कौम, मजहब के ठेकेदार बनकर नहीं आते। किसी भी संत की बातों को ले लो। जहां जाति–पाति है, जहां छोटा और बड़ापन है, उस जगह पर परमात्मा नहीं है। फिर तो परमात्मा एक दायरे में ही रह जाएगा। परमात्मा तो सब जगह ही मौजूद है। परमात्मा के यहां कोई जाति–पाति नहीं है। परमात्मा कौम, मजहबों में फंसा नहीं बैठा है। परमात्मा तो प्रेम और प्यार से मिलता है। बल्कि मेरे विचार तो ऐसे हैं कि परमात्मा की तलाश करना चाहते हो तो गरीबों की मदद करना सीखो। बुजुर्गों की सेवा करना सीखो। मैं तो पहले यही शिक्षा दिया करता हूं। अगर तुम बुजुर्गों की सेवा से नफरत करोगे तो तुम्हें कभी भी अपने दिल में शांति नहीं मिलेगी। अगर तुम गरीबों से नफरत करोगे तो सात जन्म भी तुम्हें शांति नहीं मिल सकती। जिसे भी परमात्मा से मिलना है, वह गरीबों की मदद करना सीखो। बुजुर्गों की सेवा करना सीखें। सबसे बड़ा धर्म यही है। यदि वह धर्म सीख लोगे तो यह धर्म कुदरती ही आ जाएगा। जिसके पास सदाचार का धर्म नहीं है वह कभी भी अपने मां–बाप की सेवा नहीं कर सकता है। जिसके पास सदाचार का धर्म नहीं है वह कभी भी अपने अंतर का पर्दा नहीं खोल सकता है। जिसने अंतर में चलना है, अंतर के नजारे देखने है, वह अपने सदाचार को ठीक रखें। अपने घरों में प्यार और प्रेम से रहो। मैं ये बातें क्यों बताता हूं? क्योंकि सतगुरु का सौदा बहुत महंगा है और मैंने अपना जीवन इस सौदे को करने में ही बिताया है। मैं आप लोगों को हर वक्त बताता हूं कि यह सौदा कितना महंगा है। मैं कहां नहीं गया? कोई भी साधु महात्मा मैंने सुन लिया तो उसके द्वार मुझे खटखटाने पड़े। किसका नाम लोगे? मेरी प्रारब्ध ऐसी है कि मैं उन आदमियों से नफरत करता हूं जो शराब पीता है, मांस खाता है। अगर कोई लड़की साधुओं के पांव दबाती मिल जाए तो मुझे नफरत होती है। अगर लड़की

भी किसी पराए आदमी से पांव दबवाती मिल गई तो मैं यही कहता हूं कि यह गिर गई है। नर्क में जाएगी। साधु ऐसी दशा में मिला तो मैं कहता कि यह इसी जन्म में अपना दण्ड भोग लेगा। उन्होंने भोगा। किसी का नाम न पूछना। पर मैं तो अपना ही चिट्ठा आपके सामने रखता हूं कि मैं उस सतगुरु की हाट पर कितना गया। मालाएं फेरी। जिनको तुम सनातनी कहते हो, उन वैष्णव सम्प्रदाय वालों के पास में गया। सनातनी तो संत ही हैं। वैरागियों के पास गया। दादू पंथियों के पास गया। निर्मले उदासियों के पास गया। कबीर पंथियों के पास गया। कभी खुली आंखों का ध्यान किया। कभी आंखें बंद कर ध्यान किया। कभी दीपक की लौ पर ध्यान किया। झज्जर के भगवान देव आचार्य गुरुकुल में थे उनसे मैंने गायत्री जप और प्राणायाम सीखे। कई मजहब वालों से कुछ शांति मिली। फिर भी वे बातें नहीं मिली, जिनकी मैं तलाश में था। अगर कोई कहे कि वे बातें अब भी नहीं मिली तो यह उसकी गलती है। ऐसा कोई हो तो वह मुझे बता दे कि अब भी शांति नहीं मिली है। पर मैं अब तो दावे से कह देता हूं कि जिसे भी वह मिला है शब्द के द्वारा ही मिला है। ईशूमसीह ने भी शब्द की बड़ाई की। मोहम्मद साहब ने भी शब्द की बड़ाई की है। कबीर, दादू, पलटू सभी ने शब्द की बड़ाई की है। शब्द के बिना कुछ भी नहीं है।

सौदा यूं ही महंगा है कि किसी ने माला फेरनी बताई, किसी ने प्राणायाम और किसी ने अष्टांग योग बताया। किसी ने धोती नेति बता दी। किसी ने किताबों का पाठ करना बता दिया। सभी ने कुछ न कुछ बताया। किसी ने विवेक बताया। किसी ने ज्ञान मार्ग सिखाया। सब के पास में कुछ न कुछ मिला। पर जो सौदा महंगा था, वह नहीं मिला। उस सौदे की तलाश में मैं कई जगह गया। वह कौन सा सौदा था? वह सुरत–शब्द का योग था।

इसको सहज–योग कहते हैं। इसे सहज योग क्यों कहते हैं? इसीलिये इसे सहज योग कहते हैं कि इसे साठ वर्ष का भी कर सकता है और आठ वर्ष का भी कर सकता है। इसको बीमार भी कर सकता है और स्वस्थ भी कर सकता है। यह ऐसा मार्ग है। इसे सहज कहते हैं। इसमें न जप करना है, न तप, न ही यज्ञ या हवन ही करना होता है। इनके करने वाले तो उरले व्यवहार में ही रह जाते हैं। आगे नहीं जाते हैं। इसमें न घर छोड़ना है, न बच्चे छोड़ने हैं। हां छोड़ने हैं तो भैड़े (बुरे) काम छोड़ने हैं। उन भैड़े कामों को छोड़ना सभी मजहबों में बताया गया है। आप लोग मुसलमान भाइयों से नफरत करते हो। उनकी कुरान मेरे पास हैं। एक बार मत्था टेकने के लिए। निजामुद्दीन ओलिया और खसरुद्दीन की समाधि पर गया था। तब मैं यह कुरान लाया था। पढ़ा–लिखा मैं नहीं हूं। ग्रंथ ले आता हूं। मैं खसरुद्दीन की समाधि पर मत्था टेकने क्यों गया? उसने उस महंगे सौदे को खरीदा था। खसरुद्दीन जैसा महंगा सौदा तो किसी ने भी नहीं खरीदा। हजूर महाराज राय सालिगराम ने खरीदा होगा। या ऐसा महंगा सौदा मीरा ने खरीदा था। मैं इसी कारण उनकी समाधि पर मत्था टेकने के लिए गया था। आप लोगों ने क्यों इसकी संगत की? यह देखो। यह बड़ा भारी महंगा सौदा है। मैं इस सौदे का ग्राहक था और मारा–मारा फिरता था। पर मैं सब की बातें बता देता हूं। मुझे कुछ न कुछ फायदा हुआ। उनकी कुरान में लिखा है कि जो मक्के को फूंक दे उसको मालिक बख्श देगा। पर जो शराब पीता है उसको खुदा नहीं बख्शेगा। शराब पीता है उसको भी खुदा बख्श देगा। पर जो गौ को मारता है उसको खुदा नहीं बख्शेगा। सोचो। मैं क्या कहता हूं? ये उनकी कुरान की बातें हैं। मेरी सुनी हुई हैं। पर मैंने जो पहले बातें कही हैं वे बातें आ जाती हैं कि बेकार में हम किसी की आत्मा को दुख देते हैं उसको खुदा

नहीं बख्शेगा। यही उन महात्माओं ने भी कहा है। बुल्लेशाह ने कहा, मोहम्मद साहब ने कहा कि–

मंदिर तोड़ो, मस्जिद फोड़ो, ये तो यार मुजाका है।
दिल किसी का मत तोड़ो, यही घर खास खुदा का है ।।

हम रात और दिन अपने हाथों के बनाए मंदिरों की मदद (सजाना–संवारना) करते रहते हैं। अपने हाथों से बनाई मस्जिदों की मदद करते हैं। गुरुद्वारों की मदद करते हैं। लेकिन परमात्मा के बनाए मंदिरों को तोड़ते, फोड़ते हैं। इससे बड़ा अन्याय हम कौन सा करेंगे? सोचो? परमात्मा के बनाए मंदिरों–मस्जिदों को उखाड़ते हैं और उसकी सेवा नहीं करते हैं तो परमात्मा हमसे खुश कैसे होगा? मैं इसी तलाश में दर–दर धक्के खाता हुआ फिरा था। तब जाकर मुझे सतगुरु की शरण मिली थी। तुम अपने घरों में अपने मां–बाप की भी सेवा नहीं कर सकते तो महंगा सौदा कैसे लोगे, बताओ? उस महात्मा का, मोहम्मद साहब या किसी और का यह दोहा है, उसके ऊपर आप अमल करो, मैं यह नहीं कहता कि मंदिर और मस्जिदों को फोड़ दो, गुरुद्वारों को तोड़ दो। वे कहते हैं कि इतना पाप उनके तोड़ने से नहीं होगा, जितना पाप तुम परमात्मा के बनाए मंदिरों को तोड़ देते हो, इनसे हो जाता है। महाराज जी कहा करते थे कि एक मुर्गी की तुम छुरी से गर्दन काटते हो तो उसका जीव कितना दुख पाता है। एक बकरे की गर्दन तुम छुरी लेकर काट देते हो तो उसके साथ क्या बीतती है? अगर वही बकरा आदमी हो और तुम भेड़, बकरी हो और तुम्हारी गर्दन पर वह छुरी रख दे तो तुम्हें कितना भारी दुख होगा? सोचो! इसीलिए ऐ इन्सान! उस मालिक के बनाए मंदिरों को तू मत उखाड़। यही खुदा का, मालिक का घर है। संत महात्मा सभी के सांझले आते हैं। पर यह बात तुम्हारे दिल में कब आएगी? सारी जिन्दगी पुस्तकें पढ़ते रहो तुम्हारे विचार कभी नहीं बदलेंगे। इन

पुस्तकें पढ़ने वालों ने तो देश का सत्यानाश कर दिया। क्योंकि उनके ऊपर उन्होंने अमल नहीं किया। मैं पुस्तकों का खण्डन नहीं करता। मैं उन्हीं को कहता हूं जिन्होंने अमल नहीं किया। सो वे कैसे तिर सकते हैं? सारी जिन्दगी पढ़ते रहे, पढ़ते रहे और विद्वान बन गए, चिंटी की खाल उतारनी आ गई। हिन्दी की चिन्दी बनानी आ गई। बड़े भारी अकलमन्द हो गए। उनसे पूछा जाए कि रुहानी तजुर्बा कितना है? अंतर का सफर कितना किया है? उस वक्त उन पर बिजली सी पड़ जाती है। दूसरे की जान पर आ जाते हैं। मेरी खुद के साथ बीती हुई बातें हैं। वे भाई यहां आए होंगे। मैं उनके गांव के नाम को तो भूल गया हूं। बालसमंद में सत्संग हो रहा था और वहां एक आर्य समाजी पंडित आया। मैं आर्य समाजियों से घबरा जाता हूं। आर्य धर्म की बड़ी कद्र करता हूं। आर्य धर्म तो हमारी जान है और प्राण है। समाज तो एक झगड़ा और बिमारी है। काफी लोग शराब छुटाते फिरते हैं कि शराब छोड़ो, शराब छोड़ो। शराब छुडाने का भी एक तजुर्बा होता है।

मैंने उस पण्डित जी से बातचीत की। उसने कहा–हम 'ओ३म् को बड़ा मानते हैं। मैंने कहा–बड़ी अच्छी बात है पंडित जी। मानो। मैं भी खुश हूं। उसने कहा–ओ३म् से बड़ा तो कुछ भी नहीं है। मैंने कहा–इससे बड़ा कोई न कोई और भी होगा। उसने कहा–नहीं। इससे बड़ा तो कोई भी नहीं है। मैं बोला–आप यह बताओ कि आपको अंतर का तजुर्बा कितना है? अंतर का सफर आपने कितना किया है? उसने कहा–अंतर का सफर कितना किया है? अंतर में क्या है? गोबर है? मैंने कहा–जाओ। अपने घर जाओ और अपना काम करो। आपको शर्म नहीं आती है क्या?

पिण्डे सो ब्रह्मंडे, खोजे सो पावै।
तत्वा तो में तेरा पीव, सतगुरु होय लखावै।।

महात्मा कहते हैं–

घर-घट मेरा साइयां खाली घट न कोय।
बलिहारी वा घट की जा घट प्रगट होय।।
घट में है सूझत नहीं लानत ऐसी जिंद।
नानक इस संसार के हुआ मोतिया बिंद।।

नानक साहब ने और भी कहा है–

सौ चंदा उगमिया, सूरज कई करोड़।
एता चांदण होंदिया, गुरु बिन घोर अंधियार।।

क्या वे सब के सब नालायक थे? क्या तेरे से गिरे हुए थे? क्या वे कुछ भी नहीं जानते थे? उस दिन के बाद वह समाज क्या, सारा खेल ही बिखर गया। सच्चाई होती है वहां विद्या की गम नहीं है। वहां तो करणी की गम (पहुंच) है। करणी करो। पर जो करणी करने वाले आते हैं उनकी हम जान के प्यासे बन जाते हैं। हम लोगों ने मोहम्मद साहब के दांत तोड़ दिए। कबीर साहब और तुलसी साहब को हमने जेल भिजवा दिया। रविदास जी के हाथ कटवा दिए कि देखते हैं वह अपना काम कैसे पूरा करेगा? मीराबाई के साथ कैसा बर्ताव किया? बोले कि इसका गुरु रविदास तो चमार है। हम देखेंगे यह कैसे भंडारा देगी? इसको नीचा दिखाओ। यह सौदा बड़ा महंगा है। इस सौदे को तो वही ले सकता है कि–

भक्ति करे तो कुल नहीं, कुल बिन भक्ति नहीं होय।
भक्ति करे कोय सूरमा, जाति वर्ण कुल खोय।।

जाति, वर्ण और कुल खोकर ही भक्ति की जा सकती है। ऐ सत्संगियो! क्या पूछोगे? मेरी हालत भी मैं ही बता सकता हूं। दिनोद गांव में मेरा कुएं से पानी भरना बंद कर दिया था। मेरा घड़ा भी फोड़ दिया था। किसने बंद करवाया? हरिजन भाईयों ने। क्योंकि ये मेरे पास बैठा करते थे। पर इनका पूरा एतबार भी न करना। ये मेरे पास जाकर भी शराबों–कबाबों में लग गए। बताइए

मैं क्या करूं? मैं अपने गांव वालों की बातें बताता हूं। कोई भागी ही बचा रह गया है। ये फिर लग गए। इसीलिए मुझे इन बातों से बड़ी नफरत है कि शराबी सब से बुरा पापी होता है। शराबी के घर का अन्न खाना भी सब से बुरा है। शराबी जैसा पापी न धरती पर हुआ है और न हो सकता है जो सब कुछ ही बरबाद कर देता है। आप कहोगे कि शराबी क्या ज्यादा बुरे होते हैं। कसाई इन से भी बुरा होता है। मैं कहता हूं अरे भले आदमियों! कसाई शराबी से बुरा नहीं है। कसाई अपनी लड़की का हाथ नहीं पकड़ता। कसाई अपने बच्चों को बाहर नहीं निकाल सकता है। कसाई अपनी जायदाद को नहीं बेच सकता है। कसाई अपनी इज्जत को नहीं बेच सकता है। वह तो जानवरों को ही मारता है और अपने बच्चों के लिए धन इकट्ठा करता है। इन शराबियों से तो रंडी भी अच्छी है। वह भी अपना कुछ न कुछ बचाव कर लेती है। ये शराबी कितने बुरे हैं। अपनी जायदाद को भी बरबाद कर देते हैं। इनके इतिहास सुनाऊं तो लेने के देने पड़ जाते हैं। सो सबसे बुरा कर्म शराब का है। साथ यह भी कहते हैं कि हम हिन्दू हैं, आर्य हैं। बड़े गजब की बात है। आर्य तो श्रेष्ठ को कहते हैं। ये शराबी अपना आर्य नाम रखते हैं। कहां लिखा है? शराब पीना न मुसलमानों की पुस्तकों में है और न ही सिक्खों की पुस्तकों में है। न ही हिन्दुओं की पुस्तकों में हैं और न ईसाईयों की पुस्तको में। ये सब इन्द्रियों के आनन्द के लिए हैं। न इनको कोई कहने वाला है और न कोई सुनने वाला हैं। मस्ती है। खाओ, पीओ मजे उड़ाओ।

अब का जग मीठा, अगला किन दीठ्या।

मैं आप लोगों को क्या कह रहा था? यह बड़ा भारी टेढ़ा मामला है। इस सौदे का ग्राहक कोई नहीं है और अगर कोई है तो उसे सिर देना पड़ता है। जैसे मैंने पहले सिर ही दिया। आप लोग पूछोगे कि–आपने किस तरह सिर दिया? अरे! अगर तुम्हारा कोई

कुएं से पानी बंद कर दे तो तुम्हारी क्या इज्जत रहेगी? मेरा कुएं से पानी बंद कर दिया। बुजुर्गों ने कहा कि इसका हुक्का पानी बंद है। मैंने कहा–क्यों? उन्होंने बताया कि तेरे पास चमार और धाणक बैठते हैं। तू कुजाति हो गया है। मैंने कहा–मेरा तो हुक्का–पानी बन्द नहीं हुआ, तुम्हारा हुक्का–पानी बन्द हो गया। उन्होंने कहा–वह कैसे? मैंने कहा–क्या मैं कभी तुम्हारे पास लस्सी मांगने के लिए गया? या पानी पीने गया? उन्होंने कहा–नहीं। मैंने कहा कि क्या हुक्का पीने के लिए बैठा। उन्होंने कहा–नहीं। मैंने पूछा–क्या कभी कपड़ा लेने गया? उन्होंने कहा–नहीं। मेरा हुक्का–पानी थोड़े ही बंद हुआ है। तुम ही मेरे पास आते हो। कोई भी चीज लेने के लिए आते हो। मैं उस वक्त फंड भी किया करता था। भूतनी का या बैल को फाली लग जाती थी उसका झाड़ा लगाया करता था। पचास झाड़े लगाता था। इन्हें बुलाने के लिए ऐसा करता था। सो मैंने कहा–तुम मेरे पास आते हो मैं तुम्हारे पास नहीं जाता हूं। मैंने झाड़े भी इसीलिए ही सीखे थे कि ये लोग मेरे पास आ जाया करेंगे। इस तरह से ये लोग काबू में किए थे। सच्चे सौदे का कोई ग्राहक नहीं है।

सीधे को सादी नहीं, पाखंडी को पकवान।
गौ रस तो गलियों बिके, मदिरा बिके दुकान।।

अरे! गौ का दूध तो गली–गली में बिकता है। 5 रुपए 10 रुपए किलो का भाव है। दूसरी ओर उसका 50–100 रुपए किलो का भाव है और दुकान से बड़े–बड़े खरीद कर ले जाते हैं और फिर कहते हैं कि स्वर्ग तो अब आया है। अरे! स्वर्ग क्या आ गया? तूने तो अपने कर्म में पत्थर फेंक दिए हैं।

मैं आपको अपनी ही बात बता रहा था कि मैंने क्या लिया। मैं सबके पास गया। जहां से कुछ अच्छी बातें मिली तो ले आया। नहीं तो चल दिया। पर मैं साधु भी ऐसा बना था कि सभी गांव

वालों को पता लग गया था कि साधु ऐसा बनना चाहिए। साधु बनने के बाद फिर गुरु की दया हुई। मैं आप लोगों की शरण में आ गया। फिर सतगुरु मिल गए।

सतगुरु मिलिया, लेखा निमड़िया।

वह लेखा कैसे निमड़ गया? सतगुरु बताता क्या है? सतगुरु तो एक शब्द का मार्ग बताते हैं।

गुरु सोई शब्द स्नेही, शब्द बिन दूसर न सेई।
शब्द कमावै सो गुरु पूरा, उन चरणन की होजा धूरा।।
और पहचान करो मत कोई, लक्ष अलक्ष न देखो सोई।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे, शब्द कमाओ तन मन से।

शब्द का भेद लेकर शब्द की कमाई करो। यही गुरुमुखों का और कुर्बानी का मार्ग है। आप कहोगे कि मैं उस बात को बीच में ही छोड़ गया। आप निजामुद्दीन की समाधि पर क्यों गए? वे तो मुसलमान थे। यही हमारी भूल है। खसरूद्दीन जैसा गुरुमुख कोई भी नहीं हुआ है। इसीलिए मैं उस समाधि पर गया और उनकी समाधि पर से कुछ लेकर भी आया। आपने सुना होगा कि खसरुद्दीन कैसा था? उसके गुरु निजामुद्दीन बड़े पहुंचे हुए थे। यह सौदा इतना महंगा है कि कोई भागी ही ले सकता है। मैं सौदे की बातें बाद में बताऊंगा। पहले उसकी बात बताता हूं। एक बार की बात है कि निजामुद्दीन महाराज के पास एक ब्राह्मण चला गया। ब्राह्मण की लड़की जवान थी। उसने सोचा और तो ऐसा महात्मा कोई नहीं है जो चार पैसे दे दे जिससे लड़की की शादी कर दूं। एक निजामुद्दीन है। उसके पास ही जाता हूं। इन महात्माओं के पास क्या होता है? कुछ भी नहीं होता है या फिर बहुत कुछ होता है।

आप लोग मुझे स्टेज पर बैठे देखकर कहते हो बहुत ज्यादा ऊंच कोटि में बैठे हो। मेरा क्या है? मैं तो ट्रस्टी भी नहीं हूं। यह

सारा संगत का है। मैं तो अपना टाइम निकालता हूं कि मुझे टाइम मिल जाए। मेरा एक नेम है। मेरा वह नेम पूरा उतर जाएगा तो ठीक है। मैंने छोटी उम्र में चरणदास की 'भक्ति सागर' पुस्तक सुनी थी। उस पुस्तक की एक लाइन पकड़ ली थी। उसमें क्या लिखा था? उसमें था कि अपने समय का चौथाई भाग परमात्मा की भक्ति में बिताना। चाहे माला फेरो, चाहे जाप करो या ध्यान में बैठो। कुछ करना चाहिए। उस वक्त के चौथे भाग में छः घंटे होते हैं। मैं उन छः घंटो में वैसा व्यवहार रखता आया हूं। सतगुरु मिल गए तो दूसरी लाइन पर चला गया। नहीं तो दूसरे हिसाब से माला का जाप करता था। सो नेम बना लेना चाहिए। अगर तुम बना लोगे तो इससे क्या होगा? तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा। पर नाम किसे कहते हैं?

नाम दो है–एक धुनात्मक और दूसरा वर्णात्मक। वर्णात्मक नाम लिखने पढ़ने में आता है। धुनात्मक नाम लिखने पढ़ने में नहीं आता है। इसीलिए कबीर साहब ने कहा–

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मो को भजे तब पाऊं विश्राम।।

उस सुमरन को याद कर लिया। वह सुमरन तो कुदरती होता रहता है। हमें वहां पर पहुंचने की जरुरत है। वहां कब पहुंचोगे? वहां तभी पहुंचोगे जब तुम सतगुरु की हाट से वह महंगा सौदा खरीदोगे। निजामुद्दीन की बात चली थी। ब्राह्मण निजामुद्दीन औलिया के पास चला गया। उसने कहा–महाराज जी! मैं आपकी शरण में आया हूं। निजामुद्दीन ने कहा–आओ, पण्डित जी बैठो। क्या बात है? कई–कई महात्मा ब्राह्मणों, साधुओं और भंगवा वाणे से या ज्योतिष देखने वालों से बड़ी नफरत करते हैं। वे सब काफिर हैं। किसी से भी नफरत मत करो। नफरत करोगे तो तुम बिष्टे की मक्खी बन जाओगे अगर तुम प्यार करोगे तो मधुमक्खी

बन जाओगे। जैसा दोगे वैसा लोगे। सभी से प्यार करना सीखो। अपना–अपना कर्म भोगना पड़ता है। क्या पता तुम्हारे प्यार करने से तुम्हारे भैड़े कर्म भी छुट जाएं। पंडित जी उनके पास में जाकर बैठ गए। महात्मा ने कहा–पंडित जी! जो पूजा सेवा मेरे पास आएगी सब आपकी होगी। आप एक सप्ताह मेरे पास रहो। वह पंडित वहां एक सप्ताह तक रहा। किसी ने भी चार पैसे नहीं दिए। पूजा सेवा नहीं आई। कहते हैं–

कर्म हीन के खेत में, सदा ही जेठ वैशाख।
कर्म हीन खेती करे, के बैल मरे या काल पड़े।

बेचारा क्या करता? निजामुद्दीन ने कहा–एक सप्ताह भर और बैठ जा। वह और ठहर गया। पन्द्रह दिन हो गए किसी ने भी चार पैसे नहीं दिए। महात्मा निजामुद्दीन से उसने कहा–महाराज जी! क्या करुं? निजामुद्दीन ने कहा–मेरी ये जूतियां ले जाओ। उन्होंने एक तोलिए में लपेट कर बांध कर उसको अपनी जूतियां दे दी। मैं तो उन महात्माओं के इतिहास की सुनी हुई बातें कहता हूं। जूतियां लपेट कर उस ब्राह्मण को दे दी और कहा–इन्हें ले जा। उस ब्राह्मण ने सोचा कि इस मुसलमान की जूतियां भी उठानी पड़ गई। मैं ब्राह्मण हूं, यह मुसलमान है। उसने उल्टी सीधी बातें भी कही। पर उसने सोचा कि आगे जाकर इन्हें फेंक दूंगा। उसने शरमा कर जूतियां बगल में ले लीं और वहां से वह चल पड़ा। देखो कर्म ऐसी चीज होती है। आगे उसको खसरुद्दीन मिल गया। वह निजामुद्दीन का गुरुमुख था। कहते हैं कि वह सोने चांदी के लादे हुए 100 ऊंट लिये आ रहा था। रास्ते में पंडित उसके पास से निकला।

गुरुमुख की गति है भारी। गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।

एक गुरुमुख करोड़ो जीवों को उबार देता है। वह गुरुमुख ही गुरुमुख की हाट का सौदा ले सकता है। तुम तो भागी हो। तुम्हें

नाम मिल जाता है। जगह–जगह नाम देते हैं। कहीं से भी आकर नाम ले लेते हो। पर अधिकतर नाम नहीं देते। नाम वही होता है। क्योंकि–

दुनिया ढूंढे त्रिलोकी माहिं, राम रहे चौथे माहिं।

नाम के विषय में मैं फिर थोड़ा वर्णन करूंगा कि राधास्वामी नाम ही मूल मंत्र है और कोई भी वेदान्ती या विद्वान आकर बात कर लो। मैं अनपढ़ हूं फिर भी बताऊंगा कि वह मूल–मंत्र किस तरह है? ये सारी चीजें तो इसकी ही शाखाएं और अंकुर फूट–फूट कर बनी है। मूल–मंत्र तो एक ही है। अगर तुम अपने शास्त्रों को खोलो तो उनमें भी मिल जाएगा। कुरान लोगे तो उसमें भी मिलेगा। वेद पुराण कुछ भी लो। उन सभी में मिलेगा यह मूल मंत्र और उसी मूल मंत्र को हम भूलते जा रहे हैं। इशारा तो सभी ने किया पर उस मूल मंत्र को हम भूल गए। इसके बारें में मैं फिर बात करूंगा।

अब जिस समय खसरूद्दीन के पास से पण्डित गुजरा तो खसरूद्दीन ने कहा–ठहर भाई। तेरे अंदर से तो गुरु की खुश्बू आती है। सोचो! तुम अगर अपने गुरु की खुश्बू ही नहीं पहचान सकते तो क्या सत्संग करोगे? क्या भक्ति करोगे? तुम्हारे से तो पशु भी अच्छे हैं। रात को अंधेरे में सौ बच्छे और सौ गौओं को खुला छोड़ दो, वे गौएं अपने–अपने ही बच्छों को चुघाऐंगी दूसरे बच्छों को नही। पर तुम अपने बच्चों को अंधेरे में नहीं पहचान सकते। पशुओं में सूंघने की शक्ति होती है। पर उनमें बुद्धि शक्ति नहीं होती। बुद्धि की शक्ति तो इन्सान में ही है। बुद्धि के मालिक होकर और आदमी का चोला प्राप्त करके भी हम उस घर नहीं पहुंचे तो इससे बड़ा अन्याय क्या करोगे? तुम्हारी मदद न बेटों ने करनी है, न धी–जवांईयों ने और न परिवार ने ही करनी है। तुम्हारी मदद तुम्हारे कर्मों ने करनी है। सहजो बाई का दोहा

आपने सुना होगा–

धन्वंते सभी दुखी, निर्धन दुख का रूप।

धन्वन्ते सभी दुखी, वे इसी फिक्र में रहते हैं कि किसे दूं, कहां रखूं, कहीं कोई यार लेकर मुकर न जाए। क्योंकि मैं निर्धन था इसीलिये बताता हूं। मुझे रोटियों के ही लाले पड़े रहते थे। सो ही कहा है कि निर्धन दुख का मूल।

साध सुखी सहजो कहे, पाया भेद अनूप।

अगर सुखी है तो वही महात्मा है जिसकी–

चाह मिटी, चिन्ता गई, मनुआ बेपरवाह।
जिसको कछु न चाहिए, वो ही शहनशाह।।

यह सुरत–शब्द का योग ही ऐसा होता है। उसका अभ्यास बन जाता है। पर मंजिलों के भेद बगैर कोई गुरु मिल गया तो धोखा खा जाओगे। तुम पहुंच नहीं सकते। रहबर पूरा नहीं है तो रास्ते में गिर जाओगे। ड्राईवर कच्चा है तो रास्ते में पता नहीं कहां भिड़ा देगा। दिल्ली जाना होगा तो लोहारू की तरफ भी ले जा सकता है। सो आप गिर जाओगे। इसीलिए कहते हैं–

सतगुरु पूरा खोज, तेरे भले की कहूं।
पिछलों की तज टेक, तेरे भले की कहूं।।

सो खसरूद्दीन ने पंडित जी से कहा कि गुरु की खुश्बू आती है। तुम क्या लिए हो? पण्डित ने कहा–भाई! मेरे पास तो उस मुसलमान निजामुद्दीन फकीर की जूतियां है। खसरूद्दीन ने कहा–ये मुझे दे। उसने उससे पूछा कि इन जूतियों के बदले में तू क्या लेना चाहता है? उस पंडित ने कहा–मुझे पता नहीं है। तेरा राम जागे वही दे दे। राम जागे वह दे दे का क्या अर्थ है? उन जूतियों का मोल भी क्या हुआ? खसरूद्दीन ने कहा–ऐसे नहीं। 100 ऊंट चांदी सोने के लदे है इनमें से एक छोड़ दे और बाकी ले जा और ये जूतियां मुझे दे जा। उसने कहा–मैं तो खाली ऊंट

में भी इन्हें छोड़ देता। यह तो मुझे खूब मिल गया। यह ले जूतियां। अब खसरूद्दीन वे जूतियां लेकर अपने सतगुरु के पास आया। मेरा भी कुछ ऐसा ही हाल हुआ था। मैंने भी टक्कर मारी थी। सारी जिन्दगी का कमाया धन लुटाया नहीं जाता है। सोचो तुम ग हस्थी हो। तुम सारी उम्र कमा कर धन को बर्बाद करोगे तो क्या तुम्हारी औलाद तुम्हें टक्कर नहीं मारेगी? कहेंगे कि आप क्यों धन बर्बाद करते हो? सो खसरूद्दीन ने अपने सतगुरु निजामुद्दीन को टक्कर मारी और कहा–महाराज! क्या यह धन ऐसे बर्बाद करने का है? वह क्या जाने इन जूतियों की कद्र? क्या ये जूतियां हैं? ये तो सतखण्ड में ले जाने वाली वस्तुएं हैं। आपने इतनी कमाई की और इसे बर्बाद करते हो। उसने त्राहि मचा दी। निजामुद्दीन ने कहा–खसरूद्दीन ! मेरे बस की बात नहीं थी। खुदा ने उसके लिए चार पैसे नहीं दिए। मैं उस पर खुश हो गया। वह ब्राह्मण था। मैंने उसे दे दी। खसरूद्दीन ने बताया कि मैं निनानवें ऊंट देकर ये जूतियां लाया हूं। सोने–चांदी से भरे ऊंट थे। इन्हें संभाल लो और आगे ऐसा सस्ता सौदा नहीं लगाओगे। निजामुद्दीन ने कहा–इस बार तो माफी दे दे। फिर ऐसा नहीं होगा। तुमने यह तो सुना होगा–

राम गुण गावणा भक्तां नै आवै सै।
हरि को नचावना भी भक्तां नै आवै सै।।
क ष्ण का था नेम, कर में शस्त्र नहीं उठाऊंगा।
भीष्म पितामह ने कहा हरि के हाथ में शस्त्र दिखाऊंगा।
नेम का तुड़ावना भक्तां नै आवै सै।
हरि के हाथ में शस्त्र दिवावना भी भक्तां नै आवै सै।

सो अगर सतगुरु का काबिल शिष्य हो तो उसे नचा सकता है। खसरूद्दीन ने निजामुद्दीन को नचा दिया। जैसे हजूर महाराज सालिगराम ने स्वामी जी को नचा दिया था। यदि इनसे

तुम नहीं मानते तो और भी बता दूंगा।

तुमने महाभारत में सुना होगा। पांडवों का गुरु था–द्रोणाचार्य। एकलव्य भील के लड़के ने उसको नचा दिया था। उसको मूर्ति में प्रगट कर लिया था। अगर शिष्य में गुण हों तो वह चाहे सो कर सकता है। सो एकलव्य ने उससे सारे ही काम सीख लिये। अर्जुन ने नहीं सीखे। वह सीख गया। सारी की सारी शस्त्र विद्या सीख ली। यह सब प्रेम की ही बात है। जिसको प्रेम होता है वह चाहे सो कर लेता है। सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। सतगुरु को नचाना भी किसी भागी शिष्य को ही आता है। पर वही शिष्य नचा सकता है जो स्वयं को अपने गुरु को अर्पण कर देता है।

मैं इस बात को पूरा कर लूं। निजामुद्दीन ने कहा–आगे मैं कभी भी कुछ नहीं दूंगा। इस बार मुझे माफ कर दे। खसरूद्दीन ने कहा चलो, जाओ। वही खसरूद्दीन कहीं दूर चला गया। कहते हैं कि पीछे से निजामुद्दीन ने चोला छोड़ दिया। वह अपने गुरु से पैदल चलकर मिलने के लिए आया। जब वह वहां पहुंचा तो किसी ने बता दिया कि तुम्हारे सतगुरु तो चोला छोड़ गए हैं। सतगुरु को ही शिष्य से पहले जाना चाहिए। पर सतगुरु जाते नहीं। सतगुरु तो अंग संग साथ रहते हैं। हम स्वार्थी लोग हैं। स्थूल की महिमा करते हैं। स्थूल को ही दोनों हाथों से जकड़े रहते हैं। पर सूक्ष्म रूप से सतगुरु कभी भी दूर नहीं होते हैं। जब उसे पता लगा कि स्थूल चोले को छोड़ दिया है, उसने वहां जाकर उनकी समाधि को तीन टक्करें मारी और कहा कि क्या आपकी इतनी ताकत है कि मुझे बिना बताए ही चले गए? उसके तीसरी टक्कर में प्राण निकल गए। मैं गुरुमुखों की बातें बताता हूं कि वे क्या कुछ नहीं कर सकते हैं। निजामुद्दीन की समाधि से आवाज आई कि खसरूद्दीन की पूजा मेरी समाधि से पहले होगी। ये गुरुमुख है। इसीलिए कहते हैं–

गुरुमुख की गति है बड़ी भारी।
गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।

अर्थात् एक गुरुमुख करोड़ों जीवों का उद्धार कर देता है। मैं आपको गुरुमुख की महिमा बताता हूं। गुरुमुख चाहे सो कर सकता है। आपने रविदास की कथा सुनी होगी। मीराबाई तो राजपूतानी थी। उसने ब्राह्मणों को न्यौता दे दिया। सभी ब्राह्मणों को भोजन करने के लिए आना था। अब सभी ने सोच लिया कि आज मौका है और रविदास को भंडारे में दाखिल ही नहीं होने देंगे।

जब भंडारा तैयार हो गया तो ब्राह्मणों को बुलाया कि भोजन करो। मैं महात्माओं से सुनी हुई बातें ही बताता हूं। ऐसी बातें मैंने महात्माओं से सुनी हैं। यह बात मैंने क्यों कही? क्योंकि शिष्य चाहे सो कर सकता है। निजामुद्दीन ने नचाया था तो मीरा रविदास के साथ में क्या खेल खेलती है?

ब्राह्मणों ने कहा–मीरा, भंडारे में या तो हम रहेंगे या तुम्हारा गुरु ही रहेगा। अगर तुम्हारा गुरु भी वहां आ गया तो हम भोजन नहीं करेंगे। अब आप बताओ? जिसके गुरु की निंदा होती हो तो क्या बनेगा? गुरु की निंदा सहन करना तो बड़ी कठिन है। मीराबाई तो गुरुमुख थी। यूं तो काफी आदमी अपने गुरुवों की निंदा अपनी ही जुबान से कर देते हैं। उनको नुगरे और पापी कहा जाना चाहिए। सतगुरु की निंदा करने वाला कोई पैदा ही नहीं हुआ है और न ही पैदा हो सकता है। जो निंदा करते हैं वे तो शरीर की ही करते हैं। सतगुरु जब गर्भ में ही नहीं आता तो फिर उसकी निंदा भी कौन करेगा? सतगुरु जब पानी पीता नहीं, अन्न आहार करता नहीं। वह कुछ भी नहीं करता है तो उसकी बुराई भी कौन कर सकता है? उस पर तो किसी चीज का दाग ही नहीं होता है। वह निर्लेप होता है। वह तो अजर–अमर है। कबीर साहब ने कहा है–

ना सतगुरु जननी जना, ना वाके माई बाप।
पिंड अंड में आवै नहीं, ना वहां तीनों ताप।।
अन्न आहार करता नहीं, सांसा नहीं शरीर।
पानी से पैदा नहीं, ता का नाम कबीर।।

सतगुरु चार दाग में भी नहीं आता है। सो संत के घर में संत भी पैदा नहीं होता है। संत रास्ता दूसरा है। संतान रास्ता दूसरा है। मीराबाई बेचारी घबरा गई। क्या करे? अपने सतगुरु के पास गई। उसने उनसे कहा कि महाराज! मैं तो लाठी और दिवार के बीच में आ गई हूं। उसने पूछा–क्यों बेटी? क्या बात है? मीरां ने सारी बातें बता दी कि मैंने ब्राह्मणों को न्यौता दे दिया। भंडारा दे दिया। आपका यह भंडारा था। वे कहते हैं कि अगर रविदास भंडारे में आया तो हम प्रसाद नहीं लेंगे। भण्डारा खत्म हो जाएगा। अब अगर आप ही नहीं आए तो मेरी क्या जिन्दगी रहेगी। मेरे गुरु की निंदा हो जाएगी। रविदास तो पूर्ण संत थे? इसे कहते हैं–

समर्थ को नहीं दोष गुसाईं।
रवि सलिला पावक की नाई।।

दाढ़ी बढ़ाकर तो कोई भी समर्थ बन जाता है। समर्थ का घर बड़ी दूर है। रविदास की तरह से याद करो। उन्होंने कहा–कोई बात नहीं बेटी। मैं तो बाहर बैठ जाऊंगा। मैं तेरे से नाराज नहीं हूं। तुझसे मैं खुश हूं। उन ब्राह्मणों को भोजन करने दो। मैं बाद में भोजन कर लूंगा। मेरा कुछ भी नहीं घटता। भंडारा तो अपना ही है और हम ही करने वाले हैं। संत हो तो सहन करना सीखो। संत में तो सहनशीलता होती है। तुलसीदास जी ने कहा है–

चार चिन्ह संत के प्रत्यक्ष दिखाई दें।
दया गरीबी बंदगी, पर औगुण ढक लें।।

मैं शब्द का अर्थ करना तो भूल ही गया और ही बबाल में फंस गया। क्या करूं? सो रविदास ने मीराबाई को यह शिक्षा दे

दी। अब मीराबाई आई और उसने ब्राह्मणों से कहा–पण्डित जी भोजन करो। मेरा गुरु तो बाहर दरवाजे पर बैठा है। जब सारे ब्राह्मण भोजन करने बैठे वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे। मीराबाई ने कहा–महाराज जी! भोजन करो, क्या देख रहे हो? अब सभी को थालियों पर रविदास जी बैठे दिखाई देते थे। इसका नाम समर्थ होता है। अब किसने टेक रखी? गुरुमुख तो गुरु को नचा लेता है। गुरुमुख तो गुरु को जनाने कपड़े पहना देता है। शिवव्रत लाल जी को साड़ी बंधवा दी थी। आप लोगों को तो पता नहीं है। वे मेरे दादा गुरु थे। मैंने उनके इतिहास को सुना है। सो पता नहीं क्या करवा लेते हैं। जो गुरुमुख होते हैं। सब एक दूसरे को देखने लगे। सभी कहते थे कि रविदास तो मेरे पास बैठा है। सभी ब्राह्मण चकित थे। मीरा कह रही थी कि मेरा गुरु तो दरवाजे पर बैठा है। आप देख लो। अब ब्राह्मणों ने हाथ जोड़ लिए। वे बोले–बेटी ! माफी दे दे। गलती हो गई। हमें पता नहीं था कि संतों की ऐसी महिमा भी होती है। वे चाहे सो करके दिखा देते हैं। वे अपने प्यारों को कभी भी नीचा नहीं देखने देते हैं।

अपनी बातें बता रहा था कि मैं सौदे का ग्राहक बनकर फिरा। एक लंगोटी बांध कर भी फिरा। सिर्फ एक लंगोटी थी। रोंजों (नील गाय) की तरह घूमता था। फर्क इतना ही था कि वे पूरी तरह नंगे होते हैं। मेरे पास एक लंगोटी तो थी। महात्मा बन कर इस तरह घूमा। फिर सतगुरु मिला तो उनकी अपार दया से फिर दोबारा सब कुछ कर लिया। उन्होंने कहा–पगला! तू साधू बन गया। तू तो दस आदमियों का पेट भर सकता है। तू खुद मोहताज क्यों बना हुआ है? इससे बड़ा पाप तू कौन सा खरीदेगा? मैंने कहा–कैसे? उन्होंने बताया कि कबीर साहब ने सारी उम्र खादी बुनी। रविदास ने जूतियां बनाई। सैन भक्त ने नाई का काम किया। लखमा माली ने कूवें का काम किया। किस–किस की बातें

पूछेगा। सो जो सतगुरु दो रोटी ही नहीं दे सकता, तो वह भक्ति कैसे दे देगा? उन्होंने कमाकर खाना तो पहला प्रण बताया। तभी मुझे नामदान मिला था। उन्होंने कहा था कि अगर तू जिन्दगी भर कमा कर खाने के लिए तैयार है तो नामदान मिलेगा। वह सौदा इतना महंगा है कि उसने फिर से आकर मुझे चक्कर में डाल दिया। पर उस सौदे ने मुझे बचा लिया। मेरे सतगुरु ने कहा था कि तू किसी भी चीज को जिम्मेवारी के साथ नहीं पकड़ेगा। आज जो मेरे विचार हैं, ऐसे ही विचार अगर जीवन भर रहे तो मैं तो तिरा ही बैठा हूं। अगर ये विचार बिगड़ गए तो डूब जाऊंगा पर मैं तो यही कहता हूं–

भीख मंगाई तो मेरा क्या घट जाई।
राज दिवाई तो मेरी कौन बड़ाई।।

तुम काफी लोग नाम लेने के लिए आए हो। नाम न लो तो ही अच्छा है आज अगर एक कुंडा उघाड़ते हैं तो सत्तरह गुरु निकलते हैं। नाम तो हर कोई देता रहता है।

नाम-नाम तो सब कहैं, नाम न चिन्हा कोय।
नाम गुरु की दात है, नाम कहावै सोय।।
दुनियां ढूंढै त्रिलोकी माहिं।
नाम रहे चौथे लोक माहिं।।

कबीर साहब ने तो ऐसी बातें कही हैं कि–

जहां पुरुष वहां कछु नहीं, कहे कबीर हम जानी।

नाम तो उस जगह पर है। स्वामी जी भी यही कहते हैं–

सुरत हुई अतिकर मगनानी। पुरुष अनामी जाय समानी।।

सो वह क्या है–

शब्द गुप्त जब रहा अनाम। शब्द प्रकट जब धरिया नाम।।

जब वह शब्द प्रगट हो गया तो नाम रख दिए गए और जब वह गुप्त है तो अनामी है। इस शब्द की महिमा क्या है? शब्द तो

दस हैं। अठारह मंजिलों पर चलना होता है। यदि सतगुरु उन का वाकिफकार है तो जीव का भला ही भला है। शब्द का वाकिफकार नहीं है तो धोखा ही धोखा है। महाराज जी कहा करते थे कि जो जहर खाकर मर जाएगा, तो उसका कभी न कभी उद्धार हो जाएगा। पर अगर कोई झूठे और पाखण्डियों में जा फंसा तो उनका उद्धार नहीं होगा। अब–

चल सतगुरु की हाट सौदा महंगा रे।

वह सौदा कितना महंगा है। उसके लिए सिर देना पड़ता है। यदि सिर देने से भी अगर वह सौदा मिल जाए तो भी बहुत ही बड़ी बात है। कबीर साहब की वाणी आपने सुनी होगी–

सिर माटी का तूंबड़ा, साची करके जान।
सिर के सांटे गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

अगर सिर देकर भी परमात्मा या सतगुरु मिल जाता है, फिर भी उसे सस्ता ही समझो। क्यों?

लाखों सिर तुम दे चुके यम राजा की भेंट।
एक सिर तूने नहीं दिया, सतगुरुवां की हेत।।

सतगुरु को तू एक ही सिर दे दे जैसे मीरा ने दिया और खसरुद्दीन ने दिया। हजूर महाराज ने दिया। अंगद साहब ने दिया। मैं कितने नाम बताऊं? जिन लोगों ने सतगुरु को सिर दे दिया आज वे अमर हो गए। उनकी मूर्ति गई, पर कीर्ति फैल गई। वही सारा काम करती है। वे अमर हो गए हैं। सो ही कहा है कि सतगुरु को तो तूने एक भी सिर नहीं दिया है। हम लाखों, करोड़ों सिर दे चुके हैं। लख चौरासी जिया जून में सिर ही तो देते आए हैं। तुलसीदास की बड़ी सुन्दर मिसाल है–

नौ लाख जल के जीव हैं, दस लाख पंखेरू जान।
एकादश कीट भंग है, स्थावर बीस बखान।।

तीस लाख पशु योनि हैं, चार लाख नर होई।
तुलसी इनमें राम भजै धन्य है सोई।।

वही भागी है जो राम का नाम लेता है। यही वह कीमती चोला है। तुम रामायण तो रात–दिन पढ़ते हो। एक ही चौपाई काफी है–

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद् ग्रंथन गावा।।

अर्थात् देवी–देवता भी इस मानव चोले को तरसते हैं। तुम इसे विषय–विकारों में बर्बाद करते जा रहे हो। लानत है तुम पर। सब से ज्यादा तो वही मारे जाएंगे जो अपने आपको भक्त कहते हैं। वे सब से पहले मरेंगे। क्योंकि–

जान बूझ साची तजे, करे झूठ से नेह।
वा की संगत राम जी सुपनेहु मत देय।।

हम एक सिर देते घबराते हैं। पर लाखों करोड़ों सिर देते आ रहे हैं। इसी आधार पर तो दादू जी महाराज कितनी सुन्दर मिसाल देते हैं–

नारी संग जोबन गया, द्रव्य गया मद्यपान।
प्राण गए कुसंग में, तीनों गए नादान।।

हम सारा ही जीवन विषय–विकारों में खो देते हैं। नारी के संग में जीवन खो देते हैं और शराब–कबाब में धन खो देते हैं। जीवन भर ही खोटे घड़ते रहे और तीनों ही अज्ञानता में चले जाते हैं। दादू जी कहते हैं–

तप करते जीवन गया, द्रव्य गया दे दान।
प्राण गए सत्संग में, तीनों गए मत जान।।

ये तीनों चीजें तुम्हारी गई नहीं ये तो रह गई। कोई भागी ही दादू जी की वाणी पर अमल करता है। भागी ही संतों की बातें सुनकर अपना जीवन बना सकता है। बातें तो सभी करते हैं। पर

कहना और करना दूसरी बात है।

कहते हैं करते नहीं, मुंह के बड़े लबार।
काला मुखड़ा होयगा, साईं के दरबार।।
कहनी मीठी खांड सी, करणी विष की लो।
कहनी सी करणी करै, विष का अम त हो।।

जैसे कहते हो वैसी करणी करो तो विष का अम त हो जाएगा। सो अपना जीवन पवित्र रखो। आगे कहते हैं–

श्रद्धा करके कोए भी ले लो बिन श्रद्धा नै गए नाट।

श्रद्धा करके चाहे कोई भी चले जाओ। चाहे कोई कितना ही अमीर हो चाहे गरीब हो, जाति मजहब कोई भी हो ये तो वहां होती भी नहीं हैं। जो श्रद्धा लेकर जाएगा उसे सौदा मिल जाएगा। अगर बिना श्रद्धा के जाओगे तो संत महात्मा तो जान जाते हैं। उनके तो खुद ही परमाणु टकरा जाते हैं। वे खुद ही गिर जाते हैं और अपना जीवन बर्बाद करके चले जाते हैं। इसीलिए कहते हैं कि जो श्रद्धा से जाते हैं उसी को सौदा मिलता है। वह कौन सा सौदा है? वह सुरत–शब्द का योग है। ये सुरत–शब्द का साधन ही आनन्द का मूल और सभी धनों की जड़ है। इससे बड़ा और धन कोई है ही नहीं। जो भी कुछ बना है; वेद, शास्त्र, पुरान, कुरान, गीता, भागवत सभी इसी से बने हैं और फिर इसी में जाना समाना है। लोग तत्वों के बारें में लड़ाई कर लेते हैं कि तत्व पांच, 25 या 100 है। नहीं तत्व तो एक ही है। जब तुम एक तत्व को समझ जाओगे तो उस एक शब्द को भी समझ जाओगे। एक तत्व को अगर तुम समझ गए तो तुम्हारी दुई चली जाएगी। तुम उस एक में ही समा जाओगे। उस एक में से ही आए थे और एक में ही चले जाना है इस शब्द की बड़ाई गोरखनाथ ने भी की है। बल्कि यहां तक है कि जो शब्द नहीं जानता है वह गुरुमंत्र लेने का अधिकारी नहीं है। उसे तो गौहत्या जैसा पाप लगता है। मेरे पास इतिहास है। सो

ही मैं आप लोगों को बताता हूं। यही कबीर साहब ने और हर एक महात्मा ने भी बताया है। शब्द तो शब्द ही है। वह सारी दुनिया की जान है। शब्द सबका कर्ता है। सो श्रद्धा करके जो भी राजे–महाराजे गए उनको वह सौदा मिल गया। ये कितनी बड़ी बात है श्रद्धा वाले की मैं एक मिशाल दूंगा। हजूर महाराज राय सालिगराम सारे हिन्दुस्तान के पोस्ट मास्टर जनरल थे। पर उस चीज की खातिर तड़पा करते थे। स्वामी जी के पास जाते ही उन्हें वह चीज मिल गई। उन्होंने अपना सर्वस्व उनके चरणों में वार दिया। उन्होंने अपना कुछ भी नहीं रखा। नानक साहब के पास अंगद साहब चले गए। उनके चरणों में सब कुछ झोंक दिया। रविदास जी को मीरा ने अपना सब कुछ संभलवा दिया। आपने सुना है– कबीर साहब के धर्मदास शिष्य थे। धर्मदास को जो नाम कबीर साहब ने दिया वह और तो किसी को नहीं दिया। कबीर पंथियों! तुम्हारे शास्त्रों को टटोलो। कबीर साहब ने धर्मदास को जो नाम दिया था वह राधास्वामी नाम था। ये मैं अपने पास से नहीं बताता हूं। इसे मैं तुम्हारे ही शास्त्रों से बताता हूं और जितने भी थे, उनमें किसी को 'राम–राम' किसी को 'सोहम्' का और किसी को सतनाम बता दिया। किसी को सत कबीर बता दिया। आज तुम्हारी चौंध खुल जाए। कबीर साहब ने धर्मदास को ही यह नाम बताया था। राधास्वामी। उसको ये नाम बताते ही, कबीर साहब ने कह दिया–

धर्मदास, तोहे लाख दोहाई। सार भेद बाहर न जाई।।

उसके मुंह में गुल्ला ठोंक दिया। इन बातों को आप भी मान जाओगे। सो वह मूलमंत्र या मूल नाम था वही नाम आज का संतमत देता है। इसीलिए तो सतगुरु की हाट पर सौदा महंगा है। आगे कहते हैं–

सतगुरु साईं पूरा तोलै, माशा न देते घाट।

अब सतगुरु साईं पूरा तोलते हैं। पूरा किसे कहते हैं? अगर मूर्ति पूजा में लगा दिया तो यह पूरा नहीं है। दान पुण्य में लगा दिया तो पूरा नहीं है। तीर्थ, व्रतों में लगा दिया तो पूरा नहीं है। बुरा न मान जाना। सोचो, मैं क्या कहता हूं? अगर तुम्हें होम यज्ञों में लगा दिया तो भी पूरा नहीं है। हां, इनसे आप लोगों को स्वर्ग वैकुण्ठ मिल जाएंगे। मैं नहीं कहता कि इनमें कुछ भी नहीं है। इनमें स्वर्ग–वैकुण्ठ जिसे मियादी मुक्ति कहते हैं, वह मिल जाएगी। इनमें स्थिर व अनादि मुक्ति नहीं है। अनादि मुक्ति के लिए तो तुम्हारे देवी–देवता भी तरसते हैं। तुम्हारे पुराण भी यही कहते हैं। सो–

सतगुरु साईं पूरा तोलै, माशा न देते घाट।

जो संत सतगुरु आते है वह हमें पाखण्ड से निकाल देते हैं। पाखण्ड में नहीं फंसाते हैं। वह इससे बाहर ले जाता है। वह एक शब्द का मार्ग बताता है। संतों ने कहा है–

शब्द ही मारे मर गए, शब्द ही तजिया राज।
जिन ये शब्द पिछाणियां, सरे उन्हीं के काज।।

यह शब्द क्या है? वही एक मूल मंत्र और असली चीज है। वे सतगुरु पूरा तोलते हैं। अगर कोई प्रश्न करना चाहता है तो जरुर करो। मैंने पहले ही बता दिया है कि अपने ग्रंथों को टटोल लेना कि इनमें क्या फायदा है। इनमें स्वर्ग–वैंकुण्ठ मिलेगा, मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति तो संतों के ही पास है। अगर आप कोई प्रमाण लेना चाहते हो तो तुलसी साहब की 'घट रामायण' लेकर पढ़ो। उसे सारी ही दुनिया जानती है और भी महात्मा कहते हैं आपके पुराण देखो। तुम्हारी पद्म पुराण देखो। मारकण्डेय पुराण देखो। उसमें क्या लिखा है? रामायण–महाभारत को रोज देखते हो। इनमें भी बहुत इतिहास मिल जाएंगे। अपने कर्म का भोग भोगने के बाद सब चले गए। अब बताओ, तुम्हारा पीछा किस तरह

छूटेगा। सो–

जिसको सतगुरु मिलिया, उसका लेखा निमड़िया।

उनका लेखा निमड़ जाता है। काल का कर्जा चूक जाता है। आगे कहते हैं–

ऊंच-नीच की गिणती नाही, प्रेमी के हों ठाठ।।

उसके घर में ऊंच–नीच की गिनती है ही नहीं। मीराबाई ऊंचे घर की थी और रविदास जी नीचे घर के थे। सुपच ऋषि नीच घर के थे और पांडव ऊंचे घर के थे। मतंग ऋषि तो बड़े उच्च कोटि के थे। पर भीलनी तो नीची जाति की थी। जो प्रेमी होते हैं उनके घर में उनके ठाठ होते हैं। वे चाहे सो माल खरीद लेते हैं। सो उनके घर में ऊंच–नीच नहीं है। पलटू जी ने तो बड़ी सुन्दर मिसाल दी है–

हर को भजै सो बड़ा है, जाति न पूछे कोय।
जात न पूछे कोय, हरि को भक्ति पियारी।
जो कोई करे सोई बड़ा, हरि जाति नाहिं निहारी।।
बधिक अजामिल रहे, रहे फिर सदन कसाई।
गणिका वैश्या रही, विमान पर तुरत चढ़ाई।।
नीची जाति रैदास, लिया अपने बीच मिलाई।
लिन्हा गिद्ध को गोद, दिया वैकुण्ठ पठाई।।
पलटू, पारस के छुए, लोहा कंचन होय।
हर को भजे सो बड़ा है, जात न पूछै कोय।।

कबीर साहब भी यही कहते हैं–

जात पात पूछै न कोई। हर को भजै सो हर का होई।।

सो महात्माओं के यहां जाति पाति का सवाल नहीं है। जाति दो हैं–स्त्री और पुरुष। अगर कोई तीसरी जाति हो तो बताओ। यह तो सभी जानते हैं–

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करहिं तस फल चाखा।।

जैसे तुम कर्म करोगे, वैसे ही तुम बनते चले जाओगे। घटिया कर्म करोगे तो घटिया बन जाओगे। बढ़िया कर्म करोगे तो बढ़िया बन जाओगे। ब्राह्मण लोग भी कसाई बन सकते हैं और कसाई भी ब्राह्मण बन सकते हैं। जो ब्रह्म में लीन होता है उसे ही ब्राह्मण कहा जाता है। गीता भी कहती है–

ब्रह्म पिछाणे सोई ब्राह्मण।

चरण दास जी भी कहते हैं–

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणै।
बाहर जांदा भीतर आणै।।
पांचों बसकर झूठ नहीं भाखै।
दया जनेऊ घट में राखे।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार न होई।
चरण दास ब्राह्मण है सोई।।

जो ब्रह्म को पहचान लेता है चाहे वह किसी भी जाति कौम का हो, ब्राह्मण होता है। ये जातियां तो मनु जी ने ही बनाई थीं। जातियां तो स्त्री और पुरुष दो ही हैं। जैसे–जैसे कर्म करते गए जातियां बनती गईं। हम उनसे घ णा करते गए। दुनिया में दो ही मत हैं–एक आस्तिक और दूसरा नास्तिक।

मत हैं दुनिया में दो। तीजा मत हुआ है न हो।।

सो मैंने आपको बताया कि जो प्रेम लेकर जाता है उसके ठाठ हो जाते हैं। उनके यहां ऊंच–नीच भी नहीं है। वह तो प्रेम के वश होकर चाहे सो कर देता है। हजूर महाराज ने कहा है–

मोहे प्यारा लागै हे जो मेरे प्रीतम से प्यार करै।

जो हमारे मालिक से प्यार करता है, वह हमें प्यारा लगता है। चाहे उसकी कोई जाति या कौम हो। पर पशु तो परमात्मा से प्यार नहीं कर सकते हैं। प्रेम तो इन्सान ही कर सकता है। जो इन्सान परमात्मा की भक्ति करता है और प्यार करता है वह आस्तिक है

और वही आर्य है। वही मुसलमान है, वही हिन्दू है और वही सनातनी है। इनके नियमों पर चलोगे तो पता लगेगा। किसी में भी गलत बातें नहीं हैं। सभी में भैड़े कर्म ही छोड़ने बताए हैं। आप पूछोगे कि क्या इनमें कोई गलत नहीं है। नही किसी में भी कोई गलत बात नहीं है। हम लोग ही लकीर के फकीर बन कर गिर जाते हैं। हम अपनी जीभ और इन्द्रियों के कारण से बिखर जाते हैं। हमें दुनिया का हराम का माल मिल जाता है। हम इसे बर्बाद करना शुरू कर देते हैं।

मेरा सतगुरु नहीं होता तो मैं भी गिर जाता। क्यों और कैसे गिर जाता? क्योंकि मेरे पास भी सोने के कड़े और जंजीर होती। अंगूठी और छल्ले हो जाते। फिर और भी बढ़िया कपड़े हो जाते। मेरा जो सादा व्यवहार है, यह मेरे गुरु की ही दया है। हे दाता! मेरा सतगुरु तो सतगुरु ही था। वे शहनशाहों के शहनशाह थे। ऐसा सतगुरु तो सभी को मिले। मेरे सतगुरु ने तो मेरी जिन्दगी बचा दी। क्योंकि मेरा तो वही हाल था कि गिलोय बेल और नीम चढ़ी। क्या गिरने में कोई कसर भी थी? मैं आप लोगों को बताता हूं। सतगुरु मिलने पर कोई कसर भी नहीं रहती। कुछ लोग आर्य–आर्य करते हैं। आर्य धर्म भी तो वही बताता है जो सतगुरु बताता है। जब मैं उनके पास गया, तो उन्होंने कहा–क्या बात है? मैंने कहा–मैं नाम लेने के लिए आया हूं। उन्होंने कहा–नाम तो मिल जाएगा पर मेरी बात सुन। मुझे तो पता ही नहीं था कि ये बहुत महंगा सौदा है। मैंने कहा–बताओ। उन्होंने कहा–सारी जिन्दगी कमाकर खाना पड़ेगा। तू लंगोटी बांधे, सांडों की तरह घूमता फिरता है। मुझे तो उस वस्तु की जरूरत थी और मैं पूछना चाहता था कि वह क्या चीज है। मैंने कहा–महाराज जी! मैं जिन्दगी भर कमाकर खाऊंगा। नेम से कहता हूं, मुझे वह वस्तु दे दो जिसे लोग कहते हैं कि वह चौथे लोक की है। उन्होंने

कहा–वह तो अभी नहीं मिलेगी। तुमने एक नेम तो कर लिया। दूसरा नेम यह भी कर कि लड़कियों के हाथ अपने पांव को नहीं लगवाएगा। मैंने पूछा–अगर कोई धोखे में लगा दे तो? उन्होंने कहा–उसका पाप तो उसी को लगेगा। वह पाप तुझे नहीं लगेगा। सो मेरी माताओ, बहनों सभी से कह रखा है कि मेरे पैरों को हाथ न लगाना। मैं तुम्हारा भाई हूं। तुम्हारा सिर पुचकार दूंगा। बाप भी तो बेटी का सिर ही पुचकारता है। सतगुरुवों का काम भी सिर पुचकारने का ही है। हाथ में ही दात होती है। हाथ में वह शक्ति होती है कि कितना ही आदमी दुखी क्यों न हो, सिर पर हाथ रखते ही शान्ति आ जाती है। आपने रामायण में सुना होगा? जब बाली का भाई सुग्रीव पिटकर आया और उसके शरीर पर राम ने हाथ फेरा तो उसको पूरा चैन मिल गया। राम ने उस समय पांव तो नहीं फेरा उस पर? सो! हाथ में बड़ी ताकत होती है। हाथ से धार निकलती है। जैसे कुत्तों और बिल्लियों की जीभ में से भी धार निकलती है। वे अपने घाव को भर लेते हैं। इसी तरह हाथ से भी धार निकलती है। जैसे चुम्बक में धार आती है जो लोहे को खींच लेती है। सो–

सतगुरु धरा शीष पर हाथ, मेरे सारे कर्म कट गये री।।

ये कबीर साहब कहते हैं। कबीर साहब के सिर पर रामानन्द ने हाथ रखा था। सो मेरे गुरु ने यह बात कही थी कि एकांत में किसी लड़की से बात नहीं करनी है। मेरे गुरु का नेम था यदि एकांत में बात करे तो उसका धणी या और कोई साथ हो। नहीं तो एकांत में किसी से बात नहीं करनी है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि संगत के चार पैसे नहीं बरतने हैं। सोच ले मेरी बात को। तुम्हें कमा कर खाना है। शामलात में मकान नहीं बनाना। कितनी ही बातें बताऊं? जब तक पचास साल का न हो तब तक अपनी उम्र वालों के साथ न बैठना। मेरे मास्टर

ने मुझसे तीन प्रश्न किए थे। उनका जवाब आपको आगे मिल जाएगा। इसने पूछा था कि आपको उन्होंने क्यों कहा कि जब तक 50 वर्ष की उम्र के न हो तब तक समान आयु वालों के साथ न बैठना? क्यों उन्होंने कहा कि शामलात में मकान न बनाना? महात्मा तो शामलात में ही बैठते हैं। मैंने कहा–मैं बता दूंगा। उन्होंने ये भी कहा कि स्त्री से बातें न करना। मैंने कहा–ये भी बता दूंगा। क्या तुझे पता नहीं कि बड़े–बड़े ऋषि–मुनि ही नहीं बल्कि अवतार सरीखे भी मारे गए। किसी वक्त पर पुस्तक छपेगी तो यह बात तुम्हारे आगे आ जाएगी। मेरे सतगुरु ने यह कहा तो मेरा शरीर ही कांप गया। आप बताओ कि सौदा महंगा था या सस्ता? मुफ्त की रोटियां मिलती थी। फिर कमा कर खाना पड़ गया। सौदा तो मेरा यहीं बिगड़ गया। पर वह सौदा महंगा भी नहीं था। सतगुरु ने दया की और वह सौदा मेरे लिए बड़ा अच्छा रहा। दूसरा सौदा, सुरत–शब्द के अभ्यास का था, वह बाकी ही रह गया।

दूध छठी का निकसै भाई।
तब राधास्वामी के दर्शन पाई।।
हंसी खुशी पिया मिले तो कौन दुहागन होय।
जिन पीव पाया हे सखी, तीन पाया है रोय।।

जिसको भी परमात्मा के दर्शन होते हैं, वे तो रो पीट कर ही मिलते हैं। हंसी खुशी से तो वह किसी को नहीं मिला है। आपने ये बातें सुनी होंगी कि जितनी तकलीफ उठाओगे उतना ही सुख होगा। महात्मा कहते हैं अभ्यास में जितना हो सके बैठो। अगर अभ्यास करते–करते चोला छुट जाएगा तो कोई बात नहीं है यह तो बड़ी खुशी की बात है। अगर राम के नाम लेते हुए कोई मर जाता है, वह तो बड़ा भागी है। यदि खोटे कर्म करते–2 मर जाता है तो वह निर्भाग है।

फिर कहा है–नौ द्वारों को खाली करके दसवीं गली में चलो।

वहां पर बहुत भारी विघ्न है। और एक इंच भी आगे नहीं जा सकता है इन्सान। जब रहबर पूरा मिलता है तभी जा सकता है। रूकावटें कौन–कौन सी हैं? कहीं तांत्रिक विद्या रोकती है। कहीं मंत्र रोकता है। कहीं जंत्र रोकता है, कहीं आठ सिद्धियां और कहीं नौ निधियां रोकती है और कहीं मन और कहीं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रोकते हैं। असंख्य दुश्मन बीच में खड़े हो जाते हैं। ये सारे ही रास्ते में रोकने वाले हैं। अब कैसे जाया जाए? इसीलिए कहते हैं–

वस्तु कहीं खोजै कहीं, किस विधि आवै हाथ।
कहैं कबीर तब पाइए, भेदी लीजे साथ।।
भेदी लिन्हा साथ दीन्हीं वस्तु लखाय।
कोटि जन्म का पंथ था, पल में पहुंचा जाय।।

उस सतगुरु ने नेम कराए और पहले के बंधन तोड़े। यह तो कोटि जन्मों का रास्ता था, इस रास्ते में चारों ही युग बीत गए थे। वह रास्ता नहीं मिला और अब संत सतगुरु ने वह रास्ता बता दिया। उनके बताने से वह रास्ता शनैः–2 तय हो गया। इसीलिए महात्मा कहते हैं कि भाई ! चौकस होकर और रहबर को साथ लेकर चलना। आगे फिर कबीर साहब कहते हैं–

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, लंघ जाओ ओघट घाट।

अब कबीर साहब कहते हैं कि उस घाट से आगे चले जाओ। तुलसी दास जी कहते हैं–

गो, गोचर जहां तक मन जाई। इतने माया समझो भाई।।

अगोचर में जाना है। एक महात्मा भानीनाथ हुए हैं, वे कहते हैं–**अगम-निगम दो धाम बास तेरा परे से परे।** सो उस अगम में और परे से परे वाले बास में जाना है। ये दो धाम एक इधर है और दूसरा उधर है। जो परे से परे है, उसमें जाना है। सब संतों का मार्ग यही है। जो इस मंजिल को तय कर गया उसका जीवन

सफल है। जो इस मंजिल में फंस गया तो वह काल माया से निकल नहीं सकता है।

मैंने जो शुरु में बातें कहीं थी कि बालसमन्द में एक प्रेमी मुझ से मिला। मैंने कहा–तू अब भी अपना जन्म सुधार ले। इनमें क्या रखा है। पगला इनमें तो खाली रह जाएगा। 'औ३म्' की ध्वनि होती है। वह ध्वनि कमल के फूल में से आती है। वह इतनी पवित्र ध्वनि है। उस ध्वनि को ही सुनोगे तभी तुम आर्य बनोगे। मैंने आप लोगों को आर्य धर्म बताया। सब से बड़ा और पवित्र धर्म यही है। 'औ३म्–औ३म्' कहने से शांति नहीं होती है। 'औ३म्' की तो धुनि ही सुनी जाती है। अगर कोई पूछे कि ये कैसे होती है। यह तो तुम्हें ही खुद करना और सुनना होगा। महात्मा धोखा नहीं देते हैं। उनको कोई गर्ज नहीं कि वे धोखा दें। वे तो सीधी बातें कहते हैं–आइए, देखिए और करिए।

जा को दर्शन इत हैं, वा का दर्शन उत।
जा को दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत।।

जिसको यहां दर्शन नहीं हुए, आगे जाकर भी नहीं होंगे। जिसको इस जिन्दगी में ही शांति नहीं है तो मरने के बाद कोई भी शांति नहीं आएगी। सोचो मैं क्या कहता हू? सो इसी जिन्दगी में अगर बी.ए., बी. टी. का इम्तिहान नहीं दिया तो मरने के बाद कौन देगा? यह तो धोखा ही धोखा है। कितने लोगों ने क्या–क्या नही किया? राजा न ग करोड़ गौ रोज दान किया करता था, वह गिरगिट बना। तुम्हारे शास्त्र कहते हैं। उसका धर्म पुण्य कहां गया? बलि बड़ा भारी दानी था। इन्द्र के साथ लड़ाई भी की, बहुत सुकर्म किए। उसे जाना तो स्वर्ग में था पर वह चला गया पाताल में। तुम उस स्वर्ग की बड़ाई करते हो। वहां तो ब्रह्मा का एक जन्म होता है। उतने समय में इन्द्र के तो 14 जन्म होते हैं। सो संतमत की बातें समझना ही बड़ा टेढ़ा काम है। मैंने अपनी

छोटी उम्र में महात्माओं के बड़े चरण पकड़े। उनसे मुझे कुछ मिला। सबसे बड़ा तो एक ही अनुभव बताता हूं कि ब्रह्मचर्य का पालन सब से बड़ी चीज है। ये दो प्रकार से किया जाता है। एक शारीरिक और एक मानसिक। दोनों ही कर ले तो भागी है। शारीरिक तो कर लेते हैं पर जो मानसिक कर लेता है वह बड़ा भागी है। शारीरिक बिमारी तो ठीक हो जाएगी। मानसिक बीमारी बड़ी प्रबल होती है। उसका इलाज तो संत ही जानते हैं। संत ही करते हैं। उनके पास एक दवाई है वह ऐसी है जैसे सपेरा सांप को पकड़ता है तो उसे बीन का लहरा सुनाता है। सो मन तो सांप है और सतगुरु वह लहरा बता देता है। वह बीन का लहरा अंतर में बजता रहता है और उस लहरे को सुनकर यह मन काबू में आ जाता है। शब्द धुन से ही मन काबू में आता है और कोई बात नहीं है।

शब्द धुन सुन के मन पतियायी।

मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं, न कोई जायदाद का धनी। बहुत ही गरीब आदमी हूं। आप यह भी कह देते हो कि ऐसी बातें क्यों कहा करते हो, यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं तो इतना खुट कर्मी था कि मेरी बातें पूछने की भी नहीं हैं। यह सब कुछ तो सतगुरु की शरण में जाकर ही बना है। मेरा नाम लेने से ही कर्म फूट जाया करते थे। सोचो! पूछना चाहते हो तो बता भी दूंगा। जब मैं पैदा हुआ था तो पैदा करने वाली को ही चार दिन रोटी नहीं मिली थी। सो ऐसे फुट कर्मी से क्या लोगे? पर कहा है–

सतगुरु राजी तो कर्ता राजी,
काल कर्म की लगे न बाजी।।

तुम सतगुरु–सतगुरु करते हो, तुम सतगुरु के हो जाओ तो तुमको किसी भी चीज की परवाह ही नहीं होगी। आप पूछोगे कि अगर हम सतगुरु के बन जाएं तो क्या हो जाएगा? मैं कहता हूं कि

तब तो ये टीबे हैं इनकी खांड हो जाएगी और दरिया, जोहड़ों का घी बन जाएगा। अगर सतगुरु के बन जाओगे तो घी–खाण्ड ही खाओगे। पर तुम बन नहीं सकते। तुम तो सतगुरु को अपने बेटे जितना भी प्यार नहीं कर सकते। बेटा शाम को घर नहीं आए तो मां–बाप रोटी नहीं खाते हैं। सतगुरु चाहे छः महीने मत आओ। कोई अड़चन नहीं आती है। सो सतगुरु का प्यार तो बड़ा भारी होना चाहिए।

कर्म की रेख पर मेख तो सतगुरु ही मारता है।

सतगुरु के बिना दूसरा और कोई भी नहीं है। वह सतगुरु कौन है? वह तुम्हारे अंदर बैठा है। अंदर उस गुरु की तलाश करवाता हूं। सतगुरु नाम है समझ, विवेक व ज्ञान का। सच पूछा जाए तो सारी दुनिया की जान जो शब्द है इसी का नाम सतगुरु है।

शब्द गुरु चित चेला। संतों ने दिया हेला।।

अब एक शब्द बता देता हूं–

नमो नमो सत्त पुरुष को, नमस्कार गुरु कीन्ह।
सुर नर मुनिजन साधुवां संता सर्वस दीन्ह।।
गुरु की महिमा क्या कहूं, साख भरैं सैं वेद।
बिन सतगुरु नहीं पाइए, अगम पंथ का भेद।।
शब्द ही मारे मर गए, शब्द ही तजिया राज।
जिन ये शब्द पिछाणिया, सरे उन्ही के काज।।
गगन में आवाज हो रही, झीनी-झीनी जी।
सुनता है कोई ब्रह्मज्ञानी जी .....।
पहले आया वंदे नाद बिंद से पीछे जिमाया तेरा पानी जी।
पूरण हारा पूर रहा रे, अलख पुरुष निर्वाणी।। १।।
एक बीज सकल घट बोया, क्रिया न्यारी-न्यारी जी,
दाता मेरे ने बाग लगाया खूब खिली फुलवाड़ी।। २।।

गगन मंडल में गैया रे ब्याई, धरती पे दही जिमाना जी,
मक्खन-मक्खन साधु जन लेगे, छाछ जगत भरमानी।। ३।।
ओहम् सोहम् बाजे रे बाजैं, त्रिकुटी ध्यान समाना जी,
ईड़ा पिंगला सुखमन साधो, बंकनाल लिपटानी जी।। ४।।
जग में आया बंदे क्या पटा लिखवाया, त ष्णा नाहिं बुझानी जी,
अम त छोड़ विषय रस पीवै, उलटी फांस फसानी जी।। ५।।
कहे कबीर सुनो भई साधो, अगम निगम की बाणी जी,
अपना शीश नजर भर देखो, यही है अमर निशानी जी।। ६।।

ये शब्द, शब्द की ही बड़ाई करता है। एक शब्द भेदी करोड़ों का उद्धार कर सकता है। शब्द के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। पर यह भेद बता देता हूं कि सतगुरु तुम्हारे अंदर बैठा है। वैसे सतगुरु नाम ज्ञान, समझ और विवेक का है। तुमने बाहर कितने ही गुरु धारण कर लिये और करते भी रहो। जब तक अंदर का पर्दा नहीं खुलता तब तक कुछ भी नहीं है। फिर यह भी है कि अंदर के पर्दे का वाकिफकार पूर्ण सतगुरु है तो वह जीवों का उद्धार कर देता है। क्योंकि पूर्ण सतगुरु का जीव नर्क में नहीं जाता है। तुलसी साहब और नानक साहब ऐसा कहते हैं। स्वामी जी ने भी कहा है कि पूर्ण सतगुरु का अपनाया जीव नर्क में नहीं जाता है।

दो गुरु होते हैं–एक गद्दी का गुरु और एक करणी का गुरु। करणी का गुरु मैदान में आता है, गद्दी का गुरु गद्दी पर अपनी ड्यूटी बजा कर चला जाता है। मेरी बातों पर यह ख्याल कभी न करना कि मैं अपनी बातें ही आगे रखता हूं। नहीं। कभी भी नहीं। जो बात होती है वैसी ही मैं कह देता हूं।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

सितम्बर/अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	हांसी	17 जनवरी-23 जनवरी
2.	पुट्ठी सामाण	24 जनवरी-30 जनवरी
3	मोठ	31 जनवरी-06 फरवरी
4.	अण्टा	07 फरवरी-13 फरवरी
5	बरवाला	14 फरवरी-20 फरवरी
6.	फतेहाबाद	21 फरवरी-27 फरवरी

विशेष सूचना

'राधास्वामी सन्त सन्देश' पत्रिका की वार्षिक सदस्यता 31.12.2004 को समाप्त हो गई है। अगले वर्ष 2005 का वार्षिक शुल्क 40/-रूपये, 5 वर्षीय शुल्क 200/-रूपये एवं आजीवन शुल्क 500 रुपये है, नकद, मनीऑर्डर एवं बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव, राधास्वामी सत्संग भवन (दिनोद), रोहतक रोड़, भिवानी -127021 को अपना शुल्क शीघ्र भेजकर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

कृपया अपना पता पूरा और साफ लिखें जिससे पत्रिका ठीक समय पर मिल सके।

मुसलमालों में एक बड़ी कहावत प्रसिद्ध है। जिब्राइल फरिश्ता खुदा के पास जा रहा था। रास्ते में शैतान मिला। पूछा कहां जाते हो? उत्तर दिया गया - खुदा के पास। इसने कहा कुछ भेंट भी लिए जाते हो या नहीं? जिब्राइल हक्का-बक्का हो गया। बोला उसको किस बात की कमी है, जो मैं ले जाऊं। शैतान हंसा। मूर्ख ! खुदा के पास प्रेम नहीं है। वह इच्छा रहित है। तू प्रेम देगा। वह स्वीकार कर लेगा। संसार में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो प्रेम का भूखा न हो। तुम अपना प्रेम इसको दो। वह प्रसन्न्ता से स्वीकार कर लेगा। यदि तुम अपना प्रेम नहीं देते हो तो समझ लो कि अहंकारी हो।

शिवरी भीलनी को राम का प्रेम था। इसको ज्ञात था कि राम बन में आयेंगे। वह प्रतिदिन जंगल से बेर तोड़कर लाती थी और उनको चख-चखकर जो मीठे होते थे दोनों में रखती जाती थी। जब राम आये तो इसने भक्ति के साथ वही झूठे बेर उनको दिये और राम ने खुशी से उनका भोग लगाया। शिवरी ने कहा कि भगवान! मैं बड़े समय से आपकी प्रतिक्षा में थी और दिन गिना करती थी कि कब आप आवेंगे। अब आप आ गये। मैं वृद्ध हो गई हूं। आपके दर्शन करते हुए प्राण त्यागना चाहती हूं। आप ही मेरा मृतक संस्कार करना। यह प्रेम का चमत्कार है।

इसी तरह कृष्ण भगवान के बारे में भी प्रसिद्ध है कि अहंकारी और शक्तिशाली राजा दुर्योधन का भोजन स्वीकार नहीं किया और निर्धन विदुर के घर जाकर उसकी स्त्री के हाथ से केले के छिलकों का साग बिना उबाला हुआ खाया। प्रेम वह वस्तु है जो प्रेमी और प्रियतम को मिलाकर एक कर देता है और इनमें कोई भेद नहीं रहता है।

अहंकारी को लाख जन्म में भी प्रेम का धन नहीं मिल सकता क्योंकि वह अहंकार में चूर रहता है और त्याग नहीं कर सकता। ऐसे आदमी जीवन में मृतक होते हैं। क्योंकि असली जीवन प्रेम से आता है और प्रेम ही असली जीवन है।

तुम सन्तों की और देखो। संसार में यही जीवित पुरुष है क्योंकि उन्होंने सब कुछ प्रेम की वेदी पर बलिदान कर दिया। इनका जीवन ही दूसरों के लिए उदाहरण है। इनका प्रयत्न और प्रेम दूसरों के लिए है। वह अपना कोई स्वार्थ नहीं रखते। दूसरों की भलाई के लिए जीते हैं।

तरवर सरवर सन्तजन, चौथे बरसे मेह।
परमारथ के कारने, चारों धारें देह।।

जीवन दर्शन

बाणी ऐसी बोलनी चाहिए, जो सत्य, प्रिय, हितकारी हो अर्थात थोड़े वचनों में सार-2 बात कहनी चाहिए। फालतू (व्यर्थ) बातें न करनी चाहिए। वाणी में कठोरता और झूठ नहीं आना चाहिए। किसी दूसरे को दुख हो, ऐसा वचन भी नहीं बोलना चाहिए। कपट रहित, मधुर सत्य और हितकारक वचन ही बोलना चाहिए।

आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम

13 फरवरी	रविवार	अण्टा
24 फरवरी	गुरुवार	सिवानी

अनमोल वचन

मुक्ति से अच्छा शुभ कार्य ब्रह्माण्ड में कोई भी नहीं है और उसके लिए मनुष्य जीवन से अच्छा कोई शुभ मुहूर्त नहीं है, बाकी मुहूर्त दिखवाने की आवश्यकता ही नहीं है।

–हुजूर कंवर सिंह जी महाराज

पुण्य कर्मों के करने से स्वर्ग मिल सकता है, इससे केवल थोड़े समय के लिए दुखों से छुटकारा मिल जाता है परन्तु पुण्यों का फल भुगतने के बाद फिर से नर्कों और जन्म-मरण के चक्र में आना पड़ता है।

–सुत तुलसी साहिब जी

ज्ञान-सार

शरीर-निर्वाह के लिए तो चिन्ता करने की जरुरत ही नहीं है, पर शरीर छूटने के बाद क्या होगा, इसके लिए चिन्ता करने की बहुत जरूरत है।

दुख-चिन्ता का कारण वस्तुओं का अभाव नहीं है, प्रत्युत मूर्खता है। यह मूर्खता सत्संग से मिटती है।

जो सदा हमारे साथ नहीं रहेगा और हम सदा जिसके साथ नहीं रहेंगे, उसको प्राप्त करने की इच्छा करना अथवा उससे सुख लेना मूर्खता है, पतन का कारण है।

भोगों का नाशवान् सुख तो नीरसता में बदल जाता है और उसका अन्त हो जाता है, पर परमात्मा का अनिवाशी सुख सदा सरस रहता है और बढ़ता ही रहता है।

सत्संग सार

नजफगढ़ 23-10-2004, भाग-2

कुल मालिक तो मनुष्य के अन्तर में है और वह आज के युग में पूर्ण और सच्चे सन्त-सतगुरु नाम देकर जीव को बहुत ही सरल विधि से उस के अन्तर में दर्शन करवा देते हैं। अत: सन्तों के नाम की भक्ति ही वास्तविक भक्ति है। संसारी लोग प्राय: जो भक्तियां करते हैं, वे जीव को संसार में ही रख लेती हैं। अत: उनको भक्ति न कह कर पाखण्ड कहो। बाहरी भक्ति करने वाले लोगों की अवस्था तो उन लोगों जैसी है, जिनकी आंखों में मोतियाबिन्द होता है। ये लोग जिस वस्तु की खोज करते हैं, वह उनके सामने होते हुए भी वे उसकी तलाश में दूसरे स्थानों पर हाथ मारते हैं, क्योंकि वे अच्छी प्रकार देख नहीं सकते हैं। नानक साहब ने ऐसे लोगों के बारे में ही यह बात कही है कि-

घट में है सूझत नहीं, लानत ऐसी जिन्द।
नानक इस संसार को हुआ मोतिया बिन्द।।

बाहरी संसार में हमें जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सब कुछ हमारे अन्तर में है। मनुष्य के अन्तर में सत्संग हर समय होता है और वह सच्चा सतगुरु भी मनुष्य के घट में विराजमान है, परन्तु देहधारी सन्त सतगुरु की सेवा, प्यार और उनके वचन की पालना के बिना उसके दर्शन नहीं हो सकते हैं। इसलिए सच्चे सन्त सतगुरु से प्यार, उसकी सेवा और उसके वचन की पालना का नाम ही भक्ति है। इसके अतिरिक्त संसारी लोग जो बाहरी विभिन्न प्रकार के पूजा-पाठों, जप-तपों, कथा-कीर्तनों और अन्य कर्मकाण्डों व झूठे नामों के पाखण्डों में फंसे हुए हैं, वे सब धोखे में है। आज के युग में अधिकतर लोग इन्हीं में फंसे हुए हैं, क्योंकि इन बाहरी आडम्बरों में तो उनकी कोई शक्ति नहीं लगती है। अन्तर में जाने के लिए जिस साहस और बल की आवश्यकता होती है, वह बल, साहस उनमें नहीं होता है।

इसीलिए ऐसे लोगों की अवस्था तीन सदस्यों के उस परिवार जैसी होती है जिसमें एक पुत्र और उसके माता-पिता थे। गरीबी से तंग आकर वे ध न के लिए शिव जी की भक्ति करने के लिए निकले और उन्होंने शिव जी को प्रकट भी कर लिया। परन्तु लड़के की माता ने महत्त्वाकांक्षा के कारण शिव जी से यह वर मांग लिया कि आप मुझे संसार की सबसे रूपवती स्त्री बना दो। शिव जी ने उसकी इच्छा पूरी कर दी। अचानक उस प्रदेश का राजा वहां आ गया और उस पर मोहित हो गया। इसलिए उसने उसको उठा कर अपने रथ में बिठा लिया। अब लड़के के पिता ने अपनी पत्नी को राजा के साथ जाते देखा तो उसने शिव जी से यह वर मांगा कि मेरी पत्नी सूअरी हो जाए। शिव जी ने उसकी इच्छा भी पूरी कर दी। परिणामत: राजा ने उस रूपवती की जगह पर सूअरी को बैठे देखा तो उसने उसको अपने रथ से नीचे गिरा दिया। तब शिव जी ने लड़के को वर मांगने के लिए कहा तो लड़के ने शिव जी से प्रार्थना की कि शिव जी महाराज ! आप मेरी माता को वैसी ही बना दो जैसी यह पहले थी। इस प्रकार इस परिवार के तीनों सदस्यों ने शिव जी की भक्ति भी की और उन्होंने शिवजी को प्रकट भी कर लिया परन्तु फिर भी वे उसी स्थान पर रह गये जहां वे पहले थे। अत: बिना पूर्ण और सच्चे सतगुरु की भक्ति किए संसार की सभी भक्तियां मनमुखी हैं। उनसे कुछ भी प्राप्ति नहीं होती है।

पूर्ण सतगुरु के नाम के बिना आज जीव का कल्याण नहीं हो सकता है। यदि जीव को सच्चे सतगुरु की पहचान है तो आज सन्तों ने भक्ति मार्ग को इतना सहल बना दिया है जितना पहले कभी भी नहीं रहा। स्वामी जी महाराज ने कहा है कि-

सतयुग त्रेता द्वापर बीता, काहु न जानी शब्द की रीता।
कलियुग में स्वामी दया विचारी, प्रकट करके शब्द पुकारी।।

अन्तर में सच्चे सतगुरु के नाम के सुमरन और ध्यान से जीव के मन की सहज ही पवित्रता हो जाती है और कुल मालिक के अन्तर में दर्शन हो जाते हैं तथा उसके विचार और आदतें बदल जाती हैं और जीवन सफल हो जाता है। इसीलिए सन्तों ने कहा है कि-

बाणा बदले सौ-2 बार। बदले बाण तो बेड़ा पार।

सतगुरु राजी तो कर्त्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

"मेरी भतीजी रेखा देवी पुत्री श्री चुहड़सिंह जी की शादी सन् 2002 में रविन्द्र कुमार पुत्र श्री महेन्द्रसिंह, गांव/पो. पावटीकलां, जिला मुज्जफरनगर (उ.प्र.) में की गयी थी। शादी से कुछ दिन बाद ही लड़की के पेट में दर्द की शिकायत हो गई। हम उसे गांव के डाक्टर को दिखा कर नकुड़ कस्बे में डा. के.पी. पंवार के यहां ले गये। परन्तु उनसे भी दर्द काबू नहीं हुआ। फिर उन्हें सहारनपुर भिजवा दिया गया। सहारनपुर में डाक्टर, डा. नोसरान, डा. सिगल, डा. अमरजीत पोपली, डा. ए.के.जैन, डा. संजीव मित्तल एम.डी. ने अलग–2 इलाज किया, जिसमें एक डेढ़ माह लग गया। परन्तु स्थिति पर काबू नहीं हुआ। सभी मानसिक टेन्सन बता कर पल्ला झाड़ गये। काफी पैसा खर्च किया गया। जबकि कुछ दिन पहले ही शादी में काफी खर्च किया गया था। सभी रिश्तेदार यार प्यारे सुन–सुन कर आये और इलाज न होने पर परेशानी महसूस करने लगे। इससे अलग हम सभी जादू टोने वाले भगतों को दिखा कर भी थक गये। इसके बाद डाक्टर श्री के.पी. पंवार ने कहा कि लड़की को इसकी ससुराल भेज दो। वह ससुराल भेज दी गई। स्थिति फिर काबू से बाहर हो गई। उन लोगों ने इसे शामली डा. डी.पी. गुप्ता के यहां दिखाया। काफी दिन दवाई के बाद भी कोई फायदा नहीं हुआ। स्थिति इतनी खराब हो गई कि लड़की के बचने की सम्भावना ही नहीं रही। पूरा परिवार इतना परेशान हो गया कि उससे डरने भी लग गये। कोई उसे उठाने भी नहीं जाता था।

इस स्थिति में गांव व पड़ोस के लोग इक्कठा हो गए। उस भयावह स्थिति को देखकर सभी घबराये हुए थे। उनमें पांवटी गांव का एक सत्संगी जयपालसिंह भी वहीं आ गया था। लड़के रविन्द्र ने उनसे कहा कि चाचा जी आप ही कोई उपाय देख लो। जयपाल सिंह जी ने दिनोद (भिवानी) से परमसन्त ताराचन्द जी से नामदान लिया हुआ था। उनके पास प्रसाद था, जो लड़की को जबरन दे दिया गया। लड़की ठीक हो गई। सुबह तक आराम से सोयी। सुबह ही ये लोग लड़की को लेकर दिनोद आ गये और परमसन्त कंवर सिंह जी महाराज का आशीर्वाद लिया और कुछ दिन बाद सत्संग में लड़की ने नाम की बख्शीश भी महाराज जी द्वारा कर ली गई। उसके बाद लड़की को लड़का भी हो गया। उसको आज तक कभी भी वह बीमारी या कठिनाई नहीं हुई। महाराज परमसन्त कंवरसिंह जी की क पा से सब बिल्कुल ठीक है। **डाक्टर लोग तो प्रायः केवल शारीरिक बीमारी ही ठीक कर सकते हैं, जबकि सन्त सतगुरु सभी बीमारियों का यानि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार की बीमारियों का इलाज करते हैं।"**

चौ. रामपालसिंह पुत्र श्री हरिराम
गांव शेरमऊ, पो. अम्बेहटापीर,
जिला सहारनपुर (उ.प्र.)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

कहानी

आशीर्वाद

किसी जंगल में एक शिकारी जा रहा था। रास्ते में घोड़े पर सवार राजकुमार उसको मिला। वह भी उसके साथ चल पड़ा। आगे उनको एक तपस्वी और एक साधु मिले। वे दोनों भी उनके साथ चल दिये। चारों आदमी जंगल में जा रहे थे। आगे उनको एक कुटिया दिखाई दी। उसमें एक बूढ़े बाबाजी बैठे थे। चारों आदमी कुटिया के भीतर गये और बाबा जी को प्रणाम किया। बाबा जी ने उन चारो को चार आशीर्वाद दिये।

बाबा जी ने राजकुमार से कहा-'राजपुत्र! तुम चिरंजीव रहो! तपस्वी से कहा-ऋषिपुत्र! तुम मत जीओ। साधु से कहा-तुम चाहे जीओ, चाहे मरो, जैसी तुम्हारी मर्जी।' शिकारी से कहा-'तुम न जीओ न मरो।' बाबा जी का आशीर्वाद समझ में नहीं आया। उन्होंने प्रार्थना की कि कृपा करके आशीर्वाद का तात्पर्य समझायें।

बाबा जी बोले-राजा को नर्कों में जाना पड़ता है। मनुष्य पहले तप करता है, तप के प्रभाव से राजा बनता है और फिर मरकर नर्कों में जाता है-'तपेश्वरी सो राजेश्वरी, राजेश्वरी सो नरकेश्वरी'। इसलिए मैंने राजकुमार को सदा जीते रहने का आशीर्वाद दिया। जीता रहेगा तो सुख पायेगा। तपस्या करने वाला जीता रहेगा तो तप करके शरीर को कष्ट देता रहेगा। वह मर जायेगा तो तपस्या के प्रभाव से स्वर्ग में जाएगा अथवा राजा बनेगा। इसलिए उसको मर जाने का आशीर्वाद दिया, जिससे वह सुख पाए। साधु जीता रहेगा तो भजन-स्मरण करेगा, दूसरों का उपकार करेगा और मर जायेगा तो भगवान के धाम में जाएगा। वह जीता रहे तो भी आनन्द है, मर जाए तो भी आनन्द है। इसलिए मैंने उसको आशीर्वाद दिया कि तुम जीओ चाहे मरो, तुम्हारी मर्जी। शिकारी

दिनभर जीवों को मारता है। वह जीएगा तो जीवों को मारेगा और मरेगा तो नर्कों में जाएगा। इसलिए मैंने कहा कि तुम न जीओ, न मरो।

मनुष्य को अपना जीवन ऐसा बनाना चाहिए कि जीते भी मौज रहे और मरने पर भी मौज रहे। साधु बनना है, पर साधु का वेश धारण करने की जरूरत नहीं। गृहस्थ में रहते हुए भी मनुष्य साधु बन सकता है। भगवान का भजन-स्मरण करे और दूसरों की सेवा करे तो यहां भी आनन्द है और वहां भी आनन्द है। दोनों हाथों में लड्डू हैं। कबीर साहब ने कहा है-

सब जग डरपे मरण से, मेरे मरण आनन्द।
कब मरिये कब भेंटिये, पूरण परमानन्द।।

●

सूचना

सभी सत्संग प्रेमियों से अनुरोध है कि पत्रिका से सम्बन्धित कोई सुझाव यदि है तो हमें पत्र द्वारा जरूर लिखें जिससे पत्रिका के आने वाले अंकों को और अच्छी प्रकार से प्रकाशित किया जा सके। अपने सुझाव पत्र द्वारा कृपया नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं।

सचिव,
राधास्वामी सत्संग (दिनोद),
रोहतक रोड़, भिवानी